रक्तदान – महादान

प्रस्तावना भारत एक विशाल देश है। यहाँ बहुतायत में जनसंख्या निवास करती है। प्राचीनाकाल से ही भारत की महानता संसार में व्याप्त है। भारत में तरह-तरह की जाति, धर्म, भाषा को मानने वाले लोग रहते हैं, फिर भी भारत में एकता की ज्योति फैली हुई है। सभी दिशाओं में तीर्थ स्थित हैं। भारत में बहुत से दान शुरू से ही होते आ रहे हैं। फिर वो रक्तदान हो या कोई और दान। प्राचीनकाल में ऋषि, सन्यासी, तपस्वी या आम जनता सभी कोई बड़ा से बड़ा दान करते थे। जैसे दधीचि ने अपनी हड्डियों का दान किया, कर्ण ने कवच-कुण्डल दान किए आदि। उनके दान को देवताओं ने भी स्वीकारा है। रक्तदान भी इन दोनों से बढ़कर है। ऐसा दान, जिससे किसी की जिंदगी बच सकती है।

रक्तदान रक्तदान की रचना दो बिन्दुओं से हुई है - पहला है रक्त और दूसरा है दान। रक्त का अर्थ है खून और दान का अर्थ है पुण्य या लाभ का काम करना। रक्तदान सभी दानों से बढ़कर माना गया है क्योंकि जो रक्त हमारे शरीर में दौड़ता है, उसमें से कुछ बूँदें किसी जरूरतमंद को देने पर हम बहुत बड़ा पुण्य कमा लेते हैं। रक्त के प्रकार मुख्यतः AB, A, B, O होते हैं। रक्त के कई कार्य होते हैं, इसमें हीमोग्लोबिन प्रमुख घटक है। लाल रक्त कणिकाओं के कारण ही इसका रंग लाल है।

महादान महादान की रचना मुख्यतः दो अलग-अलग अर्थ वाले शब्दों से हुई है - महा - विशाल, बड़ा दान - पुण्य या लाभ। अतः महादान का अर्थ हम विशाल दान से समझ सकते हैं। ऐसा दान, जो किसी दूसरे की जीवनरक्षा के लिए दिया जाता हो, तो वह विशाल दान ही होगा, क्योंकि जो रक्त हमारे शरीर में है, उसकी कुछ बूँदें या मात्रा देना एक आदर्शवाद का लक्षण है। दान करना तो साधारण बात है, परंतु अपना खूनी किसी को देना एक विशाल दान ही कहलायेगा। भारत हमारा महान् देश है, जिसके लोग दूसरे की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, कठिन-से-कठिन परिश्रम करते हैं, तो ऐसे लोगों के लिए तो यह साधारण बात है। ऐसा ही हमारा गंजबासौदा है, जिसमें आए दिन कोई-न-कोई चिकित्सा के और रक्त परीक्षणों के निःशुल्क शिविर लगते हैं।

सावधानियाँ

रक्तदान करते समय हमें कुछ बिन्दुओं का ज्ञान होना आवश्यक है -

1. रक्तदान हमें तब ही करना चाहिए, जब हमारी आयु-सीमा रक्तदान करने की होती है।
2. रक्तदान उस ही स्त्री/पुरूष को करना चाहिए जिसके शरीर में रक्त की मात्रा आवश्यकता के अनुसार हो।
3. कमजोर एवं रोगी स्त्री या पुरूष को रक्तदान नहीं करना चाहिए।

4. रक्तदान किसी हानिकारक बीमारी जैसे : कैंसर, तपेदिक या छूत के रोग आदि रोगों से पीड़ित व्यक्ति को नहीं करना चाहिए।
5. रक्तदान लेते समय चिकित्सकों को रक्त का समूह मालूम होना चाहिए।
6. रक्तदान लेते समय चिकित्सकों को विशेष तौर पर रक्त उसी समूह पर रखना चाहिए, जिसमें उसी समूह का रक्त हो।

उपरोक्त सावधानियों का पालन करवाने या करने पर ही रक्तदान करना चाहिए।

धारणाएँ रक्तदान करते समय अधिकांशतः मनुष्यों के मन में कई प्रकार की धारणाएँ आती हैं या पैदा हो जाती हैं या अन्य द्वारा उत्पन्न करा दी जाती हैं, तो ऐसा बिल्कुल गलत है। कुछ लोग सोचते हैं कि रक्त के दान करने पर कहीं कमजोरी तो नहीं उत्पन्न हो जाएंगी। तो यह भी बिल्कुल गलत है। रक्तदान करने से न कमजोरी और न अन्य कोई परेशानियाँ आती हैं। बस, सँभलकर रक्तदान करना चाहिए। हमारा शरीर तीन महीनों में ही उस रक्त की पूर्ति कर लेता है।

उपसंहार निबंध के उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर हमको अमल करके रक्तदान करना चाहिए। हमें सीख ऐसी ग्रहण करनी चाहिए, जो समाज के लिए हितकर रूचिकर हो। रक्तदान के लिए हमें लोगों के मन में जाग्रति उत्पन्न करनी होगी। चेतना का विकास करना होगा ताकि भारत समस्त देशों में अग्रसर हो जाए समस्त नागरिकों का कर्तव्य बनता है कि वे प्रगति-पथ पर अग्रसर हों। भारत तो प्राचीन काल से ही महान है, महान रहेगा, परंतु रहने वाले निवासी बदलते जायेंगे। समस्त भारतीयों को एकता के सूत्र में बँधना होगा, सरकार को भी रक्तदान के लिए प्रेरित करना होगा, ताकि जन-जन हमारे कर्तव्यों को समझें, तभी तो हम देश का विकास कर पाएँगे, उन्नतिशील हो पायेंगे और समृद्ध, निरोग रहेंगे, आवश्यकता पड़ने पर सबकी मदद करेंगे। चाह वह रक्त का दान ही क्यों न हो। यही लक्ष्य निर्धारित करना होगा और हमारी एकता का भी यही मूलमंत्र है।

दान तो कई हैं, पर रक्तदान महादान है।
ईंट से ईंट जुड़कर महल बना है,
प्रयासों से प्रयास करने पर ही मानव सफल होते हैं।
दो बूँद किसी की जान बचाएँ, वे बूँदें हमें उनके लिए दे देना चाहिए।
बनाने वाले से रक्त देने वाला बड़ा होता है।